[Conference- Innovation in Music & Dance :January,2015] ISSN- 2350-0530(O) 2394-3629(P)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i1SE.2015.3429

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

हिन्दुस्तानी एवं पाश्चात्य संगीत पद्धति के सम्मिश्रण द्वारा उत्पन्न संगीत– तत् वाद्यों के विशेष संदर्भ में (फ़्यूज़न–म्यूज़िक)

प्रो. किन्शुक श्रीवास्तव
उमा कुमारी वैष्णव
शोधार्थी
संगीत विभाग, वनस्थली विद्यापीठ

शास्त्रीय संगीत भारतीय संस्कृति का एक अनमोल तत्व है। कोई भी धर्म, सभ्यता, संस्कृति, परम्परा संगीत के साथ ही चिरन्तनता को प्राप्त होता है। पृथ्वी पर प्रत्येक जीवन्त तत्व संगीत से जुड़ा है और प्राणीमात्र आपस में संगीत द्वारा ही जुड़े है। क्योंकि मानव भाव–प्रधान है और संगीत के द्वारा अभिव्यक्त भावों के माध्यम से ही भिन्न संस्कृतियों के लोग भी आपस में जुड़े हैं।

शास्त्रीय संगीत या भारतीय सांस्कृतिक संगीत जिसे वैदिक संगीत अथवा प्राचीन संगीत और कलात्मक संगीत भी कहा जा सकता है, अपनी भौगोलिक सीमाओं के अन्दर ही भिन्न–भिन्न धाराओं में पल्लवित होता आ रहा है। भिन्न–भिन्न धर्मों के अनुसार गाया बजाया जाने वाला संगीत आधुनिक युग में अंषतः और विशेषतः औद्यौगिक प्रगति में नवीन प्रयोगों द्वारा विकसित हो रहा है। भिन्न–भिन्न देशों में संगीत का संवेदन अलग–अलग प्रकार से होता है यह सारे कारण और प्रभाव एवं वैज्ञानिक साधन आधुनिक युग के नए संगीत 'फ़्यूज़न' को प्रवाह देते है।

'फ़्यूज़न' संगीत नवीन प्रयोगों से सम्बन्धित भारतीय शास्त्रीय संगीत पर पड़ा कोई दुष्प्रभाव न होकर 21वीं सदी की वैज्ञानिकता और संगणात्मकता के बल पर उपजा संगीत है। 'फ़्यूज़न' म्यूज़िक पूरे संसार में सभी देशों में बन रहा है। यही आज के युग में संगीत की आधुनिक भूमिका है। फ़्यूज़न म्यूज़िक में भिन्न–भिन्न देशों की भिन्न–भिन्न सभ्यताओं का सम्मिश्रण है। इसमें संगीतकार अपनी व्यक्तिगत ऐतिहासिक सांस्कृतिक सीमाओं से परे अन्य संस्कृति से जुड़े संगीतकारों के साथ मिलकर इकट्ठे संगीत के नए तरीकों की रचना करते हैं।

भारतीय शास्त्रीय संगीत में विदेश की धरती पर फ़्यूज़न बहुत समय पूर्व ही शुरू हो गया था, जब महान् सितार वादक पण्डित रवि शंकर ने विदेशों में जाकर कार्यक्रम किए और वहां के संगीतकारों के साथ मिलकर संगीत में मिश्रण (Blending) का काम किया।

फ़्यूज़न म्यूज़िक की परिभाषा– किसी एक देश की संस्कृति का संगीत जब दूसरे देशों की संस्कृतियों के साथ मिलता है तो एक नया संगीत प्रकार बन जाता है। अर्थात् फ़्यूज़न से अभिप्रायः है 'किसी एक प्रकार के संगीत का दूसरे प्रकार के संगीत में Fuse हो जाना।' अतः सांस्कृतिक स्पष्टता का खत्म हो जाना।

'Fusion Music is considered as an experiment with music, it does not manifest any form of cultural expression. Fusion is of interest to some audience and profit for music industry

जब पूरे विश्व की विभिन्न संस्कृतियों का संगीत मिलता है तो फ़्यूज़न म्यूज़िक बनता है। व्यक्ति जहाँ भोगोलिक सीमाएं लाघंता है तो एक नवीन संसार की रचना अवश्य करता है। भारतीय शास्त्रीय संगीत जब विदेशी मंच पर पल्लवित होने लगा, तो विदेशी संगीतकारों से सम्बन्ध भी स्थापित होने लगे। इन्हीं स्थापित सम्बन्धों ने संगीतकारों को नवीन प्रयोगों के अवसर प्रदान किए। यह नवीन प्रयोग भारतीय शास्त्रीय संगीत को अन्तर्राष्ट्रीय पल्लवन देने लगे और भारतीय शास्त्रीय संगीत की पहचान बहतर होती चली गई और जब भारतीय शास्त्रीय संगीत में विश्व की सभी संस्कृतियों का संगीत मिश्रित होने लगा तो वह संगीत फ़्यूज़न म्यूज़िक कहलाया।

'फ़्यूज़न म्यूज़िक' यह शब्द जितना भारत में इस्तेमाल हो रहा है, उतना ही पश्चिम में भी है। वास्तव में भिन्न संस्कृतियों के संयोग से जो संगीत बना फ़्यूज़न म्यूज़िक कहलाया। सबसे महत्त्वपूर्ण पक्ष जो फ़्यूज़न का भारत में और विदेशों में युवा वर्ग के साथ जुड़ा वह बना फ़्यूज़न जिसमें शास्त्रीय और पॉप के मध्य की दूरी को तोड़ा गया। परम्परा व आधुनिकता की दूरी को

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

कम किया गया। आज फ़्यूज़न म्यूज़िक पूरे विश्व की संस्कृतियों को अपने में लपेटे हर देश की भाषा और वेषभूषा पर आधिपत्य जमाए, दुनिया के कोने–कोने के ग्रामीण वर्ग का संगीत भी अमेरिकी पॉप म्यूज़िक के माध्यम से प्रस्तुत किया जा रहा है।

पण्डित निखिल बैनर्जी कहते है– "Indian Classical Music is so rich that it needs no modernism"

भारतीय शास्त्रीय संगीत के विद्वान कलाकार सितारवादक पण्डित रविशंकर जी ने पूरे विश्व के अनेक देशों में अपने सितार वादन का प्रदर्शन किया और उनके संगीत प्रकारों के साथ मिलकर अपने संगीत को उभारकर रखना उनकी और भारतीय शास्त्रीय संगीत को अन्यतम उपलब्धि है। 1960 ई. में पण्डित रविशंकर विदेशों में बीटल्स के सम्पर्क में आए। जार्ज हैरीसन के साथ मिलकर भारतीय शास्त्रीय संगीत में जाज़ म्यूज़िक का फ़्यूज़न किया। उन्होंने अत्यधिक निपुणता से पूर्व और पश्चिम के संगीत को मिलाया। पण्डितजी ने जाज़ संगीत के कलाकारों का एक समूह बनाया और भारत के विभिन्न शहरों दिल्ली, मुम्बई, बंगलौर और गोवा आदि शहरों में कार्यक्रम करवाए। 1961 ई. में पण्डित रविशंकर और अमेरिका में वेस्ट कोस्ट के सैक्सोफोन वादक और बांसुरी वादक बड़ शंक (Bud Shunk) के प्रतिनिधित्व में एक समूह बना, जिसमें भारतीय शास्त्रीय संगीत और जाज़ संगीत का परस्पर मिश्रण हुआ। इस अलबम का नाम 'Improvisation' भारतीय सांगीतिक अर्थों में आलापचारी। यह मिश्रण 'पाथेर पांचाली' का निष्कर्ष (Theme Song) था। जिसमें पष्चिमी संगतकारों के साथ मिलकर पण्डित रविशंकर जी ने सितार बजाया है। इस संगीत में सितार की मैलोडी और पाश्चात्य फिल्म संगीत का अनोखा सम्मिश्रण है।

भारत के अग्रगण्य सितार वादक उ. निशात खाँ ने जाज़ संगीत के साथ सितार बजाया।
1960 के दशक में पण्डित रविशंकर ने कैलीफोर्निया में रॉक म्यूज़िक के Rock Stars के साथ मिलकर सितार और रॉक म्यूज़िक में फ़्यूज़न की रचना की।

यह भी भारतीय और पाश्चात्य संगीत शैलियों में फ़्यूज़न का एक सोपान था। यही से पाश्चात्य संगीतकार भारतीय शास्त्रीय संगीत विशेषतः सितार वादक की ओर आकृष्ट हुए। भारतीय वाद्यों में सारंगी, सितार, सरोद, दिलरूबा, वीणा आदि ध्वनि की उच्च अभिव्यक्ति का माध्यम है। जल्दी ही इस अन्दाज को बहुत से प्रचलित यूरोपियन और अमेरिकी संगीतकार अपनाने लगे। 1965 में जार्ज़ हैरिसन ने सितार को Norwegian wood में बजाया। अन्य जार्ज़ संगीतकार माईलसडेविस ने खलील बालकृष्ण, बिहारी शर्मा और बादल राय के साथ फ़्यूज़न संगीत के ध्वनि मुद्रण किए। अन्य पाश्चात्य कलाकारों ने भी भारतीय संगीत के तत्वों और भारतीय वाद्यों की विशेषताओं को अपना कर फ़्यूज़न किए, और Grateful Dead, Incredible string Band, The Rolling Stones, The Move and the traffic.

यहूदी मैनूहिन और जार्ज हैरीसन ने भारतीय शास्त्रीय संगीत को आत्सात् कर अपने देशों में इसकी प्रतिष्ठा बढ़ाई है और शास्त्रीय संगीत की अतल गहराईयों से भी अवगत कराया है। विदेशों में भारतीय शास्त्रीय संगीत के महान् कलाकार भी विदेशी कलाकारों के साथ मिलकर लगातार फ़्यूज़न कर रहे है। जो निम्नानुसार है–

1. पण्डित रविशंकरजी के शिष्य विश्वविख्यात मोहन वीणा वादक पंडित विश्वमोहन भट्ट जिन्होंने पाश्चात्य वाद्य गिटार में कुछ परिवर्तन और परिवर्धन करके, कई देशों के संगीत के साथ फ़्यूज़न प्रयोग कर चुके हैं।
1994 में अमेरिका के गिटार वादक आर. वाई. कूडर (R.Y. Cooder) के साथ जुगलबन्दी 'ए मीटिंग बाई द रीवर' को संगीत जगत का सर्वोच्च अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान ''ग्रैमी अवार्ड'' मिला। अमेरिकी बेला वादक लैंक के साथ डिस्क 'ताबुलरसा', अमेरिका के ही डोगरी गिटारवादक जैरी डगलस (Jerry Douglas) के साथ डिस्क बनाई 'बरबाऊन एण्ड रोज वाटर' और स्ट्रेग्लो के साथ जुगलबन्दी में निर्मित काम्पैक्ट डिस्क काफ़ी लोकप्रिय हुए हैं।

2. बाबा अलाउद्दीन खां के प्रसिद्ध शिष्य सरोद वादक बसन्त रावजी ने इलैक्ट्रानिक गिटार वादक कार्लस संतना (Carlos Santana) और जान मैक्लाविन (John Mclaughin) के साथ काम किया। "East West Blends" के अन्तर्गत आरिजन (Group Oregan) के साथ भारतीय संगीत को पाश्चात्य संगीत के साथ मिलाकर फ़्यूज़न म्यूज़िक की रचनाएँ की।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

3. अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त सारंगी कलाकार उस्ताद सुल्तान खां ने जार्ज हैरीसन के 1974 के डार्क हाउस वर्ल्ड टूर में पण्डित रविशंकर के सानिध्य में अपना संगीत प्रदर्शन करते रहें हैं उनके द्वारा फ़्यूज़न म्यूजिक की रचनाएं निम्नानुसार है– शीर्षक Dynamic Fusion of Melody and Rhythm. Minstrels of Sauranstra farooga, Recapitulation, Pentatonic Devotion, reveries के अन्तर्गत Spanish Guitar Player Marco Salaun के साथ मिलकर फ़्यूज़न म्यूज़िक की रचना की। एक और फ़्यूज़न में इन्होंने इसी गिटार वादक के साथ Reveries on a Hariday Gypsies on moentains नाम से फ़्यूज़न की रचना की।

4. मैंडोलिन वादक यू. श्रीनिवासन ने रीयल वर्ल्ड के अन्तर्गत माईकल ब्रूक के साथ मिलकर 'Dream' नामक अलबम निकाला जिसमें इलैक्ट्रिक मैंडोलिन, वायलिन, अवनद्ध वाद्य व सैलो वाद्यों का उपयोग किया गया।

5. भारतीय वायलिन वादक एल. सुब्रमण्यम् ने पाश्चात्य वायलिन वादक यहूदी मैनूहिन के साथ बजाया।

अनेक अन्य सुप्रसिद्ध एवं प्रसिद्ध संगीतवादक भी भारतीय संगीत के प्रचार के साथ–साथ नए–नए प्रयोग कर रहे हैं।
संस्कृति से जुड़ने के लिए प्रवासी भारतीयों में भारतीय संगीत तो जन्मजात था ही, परन्तु विदेश में निवास होने से वहां के सांस्कृतिक संगीत के साथ सम्बन्ध होना या हो जाना एक स्वाभाविक घटना थी। अतः फ़्यूज़न म्यूज़िक के विकसित होने में मूलभूत कारण प्रवासी भारतीयता का भी है। जिस प्रकार यान्त्रिकी प्रगति ने व्यक्तियों और संस्कृतियों को एक दूसरे के इतना नज़दीक ला खड़ा किया है कि मूलभूत तत्व और ग्रहणीय तत्व दोनों मिल गए हैं और दोनों चीज़ों को संश्लिष्टता तक पहुंचा दिया है।

अतः स्पष्ट है कि फ़्यूज़न म्यूज़िक में सभी तरह का (म्यूज़िक) संगीत सम्मिलित हो जाता है और सब संस्कृतियों के लोगों को एक सांझी रिद्म पर नचा देता है।